प्रवेशांक

शोधामृत

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित अर्धवार्षिक मूल्यांकित शोध पत्रिका

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-1 (Jan-Jun) 2024
Page No.-15-21

©2024 Shodhaamrit (Online)

www.shodhamrit.gyanvividha.com

डॉ. दिवाकर चौधरी

सहायक प्राध्यापक,

हिन्दी विभाग,

श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय,

सीतामढ़ी, बिहार

Corresponding Author :

डॉ. दिवाकर चौधरी

सहायक प्राध्यापक,

हिन्दी विभाग,

श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय,

सीतामढ़ी, बिहार

मधु कांकरिया के उपन्यासों का शिल्प विधान

मधु कांकरिया हिंदी साहित्य की लब्धप्रतिष्ठित लेखिका हैं। उन्होंने हिंदी गद्य साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है । उन्होंने कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृतांत, सामाजिक विमर्श और टेलीफिल्म आदि विविध गद्य विधाओं में रचना की है । उनकी प्रसिद्धि कथाकार और मुख्यतः उपन्यासकार के रूप में है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याओं को उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से उठाया है। साहित्य में उनके विशेष योगदान के लिए अनेक सम्मान से सम्मानित किया गया है। जिसमें – 'कथाक्रम सम्मान', 'बिहारी सम्मान', 'मीरा स्मृति सम्मान' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

उपन्यास वर्तमान युग की अत्यंत लोकप्रिय विधाओं में से एक है । वर्तमान युग के उपन्यासों में मानवीय संवेदना और सामाजिक यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है, जिससे इनमें सम्पूर्ण मानव-जीवन का प्रतिबिंब प्रतिबिंबित होता है। समकालीन महिला उपन्यासकारों में मधु कांकरिया का विशिष्ट स्थान है। उपन्यासकार मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 ई. को कलकत्ता के निम्नमध्यवर्गीय मारवाड़ी परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रसिद्ध लेडी बेटन कॉलेज से हुई थी, उन्होंने अर्थशास्त्र से एम.ए. और फिर कंप्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा किया था ताकि वो आत्मनिर्भर बन सकें । उनके पिताजी व्यवसायी थे, फिर भी उनकी साहित्य में रूचि थी और वो बांग्ला व हिन्दी के बड़े और प्रसिद्ध साहित्यकारों की प्रसिद्ध पुस्तकें लाया करते थे । मधुजी भी उन पुस्तकों का अध्ययन करती थी जिससे उनकी रूचि साहित्य के प्रति विकसित हुई । मधुजी बचपन से ही रुढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोही स्वभाव की थी । डॉ. उषा कीर्ति राणावत मधुजी के सम्बन्ध में लिखती हैं कि- "अपने विद्रोही स्वभाव के कारण पितृसत्तात्मक परिवार में अपनी जगह बनाने में उन्हें संघर्ष करना पड़ा। बचपन से ही अपने माँ से वे छोटी-छोटी बातों को लेकर बहस करती।"[1]

वे प्रारम्भ से ही मारवाड़ी समाज में व्याप्त रूढ़ियों और पुरुषप्रधान नियमों को सहज ही स्वीकार नहीं कर पाती थी । बचपन से ही व्यावसायिक परिवार में होते हुए भी अपनी माँ को अपनी जरूरतों और थोड़े-थोड़े पैसों के लिए जूझते देखा था । इस माहौल ने मधुजी के बालमन पर बहुत गहरा असर छोड़ा था और उनके मन में पुरुषवादी समाज के प्रति

प्रतिरोध और विद्रोह की भावना ने जन्म लिया, जो आद्यांत उनकी रचनाओं में दीखता है। उनके सम्पूर्ण साहित्य में उनके परिवेश और उसके प्रति विद्रोह का स्वर मुखरित है।

उनके प्रकाशित उपन्यासों की संख्या छः है-'खुले गगन के लाल सितारे'(2000), 'सलाम आखिरी'(2002), 'पत्ताखोर'(2005), सेज पर संस्कृत'(2008), 'सूखते चिनार'(2012) और 'हम यहाँ थे'(2018)।

किसी भी उपन्यासकार के उपन्यास को समझने के लिए उसके शिल्प को जानना आवश्यक है। सर्वप्रथम उपन्यासकार अपने उपन्यास की कथा या उसकी पृष्ठभूमि तैयार करता है, जिस दृष्टि और व्यवस्था का निर्वहन इस पूरी प्रक्रिया में करता है वह उसका शिल्प कहा जाता है। उपन्यास के शिल्प विधान से तात्पर्य उपन्यास की बनावट, बुनावट या ढांचा से है।

उपन्यासकार अपने जीवनानुभवों से एकत्रित चरित्रों और घटनाओं को क्रमबद्ध और कलात्मक ढंग से इस तरह बुनता और प्रस्तुत करता है कि उसका अभिप्रेत भाव प्रकट हो सके। उपन्यास के शिल्प के सन्दर्भ में सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ. गोपाल राय लिखते हैं कि -"उपन्यास को ध्यान में रखें तों कथ्य, विजन, संवेदना, अनुभव विचार, कथा, पात्र, परिवेश, भाषा आदि उसके उपादान हैं। इन्हीं से उपन्यास बनता है। इन्हीं की संयोजना शिल्प कहलाता है।"[2]

उपन्यासकार अपने कथ्य की अभिव्यक्ति या समकालीन सत्य, संघर्ष की अभिव्यक्ति हेतु अपनी कल्पना के सहारे उपन्यास में यथोचित घटनाओं, काल्पनिक चरित्रों का सृजन करता है, जो विभिन्न प्रसंगों के उद्भेदन में सहायता करते हैं। साथ ही चरित्रों और घटनाओं की विश्वसनीयता हेतु परिवेश या देशकाल निर्मित करता है। तत्पश्चात उपयुक्त शब्द विधान का संधान कर उसे अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है। उपन्यास के सृजन हेतु इन सभी तत्वों के कुशल प्रयोग को ही सामान्यतः उसका शिल्प विधान कहते हैं।

उपन्यास की विषयवस्तु और कथ्य के अनुरूप ही उपन्यासों का शिल्प विधान भी भिन्न-भिन्न होता है। जिस उपन्यास का शिल्प विधान जितना प्रभावशाली होगा वह उसके कथ्य की अभिव्यक्ति उतना ही बेहतर कर सकेगा। साथ ही वह पाठकों के लिए भी उतना ही रोचक भी होगा।

इन्हीं वर्णित तथ्यों के आलोक में मधु कांकरिया के उपन्यासों पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि उनके उपन्यास अपने कथ्य की अभिव्यक्ति करने में सफल रहे हैं।

वस्तु शिल्प- इसके अंतर्गत मुख्यतः कथावस्तु आती है। कथावस्तु उपन्यास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष होता है। किसी भी उपन्यास की सम्पूर्ण बनावट और बुनावट इसी पर निर्भर है। किसी भी उपन्यासकार के विचार एवं अनुभूति की अभिव्यक्ति हेतु कथावस्तु की भूमिका महत्वपूर्ण है। शैलेश मटियानी के अनुसार-"रचना में वस्तु और संवेदना को एकदम पृथक करके देखने की गुंजाईश कतई नहीं होगी, क्योंकि उसमें न सिर्फ वस्तु और संवदेना, बल्कि भाषा, शिल्प-विचार का भी समावेश संरचनात्मक होगा। संरचना विभिन्न वस्तु-तत्त्वों के भिन्न-भिन्न गुणों को एक रूप देना है अस्तु, रचना की पाठ-प्रक्रिया में उसकी संरचना के स्वरूप को भी समझना आवश्यक होगा।"[3]

कथावस्तु के दृष्टिकोण से मधु कांकरिया के उपन्यास विविध कथा-प्रसंगों से युक्त और कलात्मक हैं। इसमें कल्पना की अपेक्षा समकालीन समाज का यथार्थ ज्यादा है। यह इसलिए कि उनमें मौलिकता ज्यादा है। उनके उपन्यास की कथावस्तु मुख्यतः सामाजिक, धार्मिक-सांस्कृतिक तथा राजनितिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। यूँ कहें कि उनके उपन्यासों का उद्देश्य ही बहुआयामी सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति है।

मधु कांकरिया के उपन्यास अपने सामान्य आकार में भी विशिष्ट हैं। विशिष्ट इसलिए क्योंकि उनकी कथा योजना सशक्त और उद्देश्यपूर्ण है तथा समकालीन जीवन का विशद यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में सफल है। कथा में व्यर्थ विस्तार की जगह उन्होंने गहराई और घटनाओं में स्थूलता की जगह सूक्ष्मता को प्रधानता दी है।

उनके प्रकाशित सभी उपन्यास कथावस्तु के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। 'खुले गगन के लाल सितारे' का केन्द्रीय भाव नक्सली आंदोलन औए उसका क्रूरतापूर्ण दमन है। साथ ही यह निम्नमध्यवर्गीय मारवाड़ी-जैन परिवार की रूढ़ियों और अंतर्विरोध से भी हमरा साक्षात्कार कराती है तथा इस सन्दर्भ में लेखिका की अपनी मान्यताओं और निष्कर्षों का भी परिचय देती है।

'सलाम आखिरी' कलकत्ता के विश्वप्रसिद्ध सोनागाछी के वेश्या जीवन की त्रासदी और विद्रूपताओं से साक्षात्कार कराती है। यह उपन्यास वेश्यावृत्ति के दलदल में फंसी लड़कियों की आपबीती और कारणों को इस तरह प्रस्तुत करती है कि उनके प्रति पाठकों के हृदय में सहज ही करुणा का भाव जागृत कर देती है। यह उपन्यास हमारे समाज की रूढ़िवादी और खोखली आदर्शवादी मान्यताओं और गलत नीतियों के कारण वेश्यावृत्ति के बढ़ते चलन और उसके सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित करने का प्रयत्न करता है।

'पत्ताखोर' वर्तमान युवावर्ग के उच्छृंखल और स्खलित जीवन मूल्यों के संधान और नशाखोरी के युवावर्ग पर बढ़ते घातक प्रभावों व परिणामों को अभिव्यक्त करता है। साथ ही यह हमारे वर्तमान आधुनिक विकसित समाज के लिए एक सवाल भी छोड़ जाता है कि हमारे आधुनिक और विकसित समाज में युवा कहाँ और किस ओर जा रहा है। यह वर्तमान और भविष्य की बहुत ही गंभीर समस्या को चित्रित करता है।

'सेज पर संस्कृत' रोचक शैली में जैनधर्म में व्याप्त स्त्री शोषण और विषंगतियों को उद्घासित करता है। लेखिका का कथन है - "महावीर ने जो अमृत वचन दिये थे, वे टनों भूसों के बीच कहाँ बिला गए, क्योंकि अंतर्जगत की समस्याएँ साश्वत हो सकती है। भीतर की दुष्ट प्रवृत्तियों को शामिल करने के सवाल शाश्वत हो सकते हैं, भीतर के शून्य से ऊपजी जिज्ञासाएँ शाश्वत हो सकती हैं, पर बाहरी आवरण जैविक समस्याएँ एवं मानवीय निर्यात एवं अस्तित्व की समस्याओं के वे समाधान जिनके तार गतिशील समाज और व्यवस्था के तानोबानों से जुड़े हैं..युगों-युगों तक कैसे अपरिवर्तित रह सकते हैं।"[4]

'सूखते चिनार' एक मारवाड़ी युवक की कहानी है जो देशभक्ति के विज्ञापन को देखकर फ़ौज में भर्ती होता है और अंत में अपने ही फ़ौज पर मुकदमा करने के लिए बाध्य हो जाता है। उसके माध्यम से लेखिका ने फौजी जीवन की त्रासदी और जीवनानुभवों से परिचित करने की कोशिश की है।

'हम यहाँ थे' में लेखिका ने एक सामान्य स्त्री के जीवन संघर्ष को सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत किया है। घरेलू हिंसा, रूढ़िवाद और कोलकाता की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण करते हुए पुरुषवादी समाज में एक वजूद खोजती स्त्री और आधुनिक और रूढ़िवादी सोच का टकराव, कुलीन-अकुलीन के दंभ का संघर्ष चित्रित किया है।

चरित्र चित्रण- पात्र या चरित्र चित्रण औपन्यासिक शिल्प विधान का एक प्रमुख उपादान है। किसी भी उपन्यास की सफलता या प्रसिद्धि बहुत कुछ उसके चरित्र-चित्रण पर उसकी सफलता पर निर्भर करता है। मधुजी के उपन्यासों में चरित्रों के माध्यम से समकालीन सच इस तरह अभिव्यक्त है कि वो पाठकों पर अपनी गहरी छाप छोड़ जाते हैं और सोचने पर मजबूर कर देते हैं। उनके उपन्यासों में युगीन राथार्थ की अभिव्यक्ति होने के कारन किसी भी तरह का चरित्र नहीं छुटा है। आमिर-गरीब, पुलिस, सेना, युवावर्ग, दलित, स्त्री, राजनेता, आदिवासी, मजदूर, आतंकवाद, नक्सलवाद, मार्क्सवाद, धर्म, रूढ़ि, गांधीवाद, नशाखोरी, वेश्य आदि सभी इनके उपन्यासों में सशक्त और जीवंत रूप से अभिव्यक्त हैं। 'खुले गगन के लाल सितारे' में 'मणि' और 'इंद्र' के माध्यम से नक्सल आन्दोलन का अन्तर्निहित सत्य, 'सलाम आखिरी' में सोनागाछी की 'मीणा' के माध्यम से वेश्या जीवन की त्रासदी, 'सेज पर संस्कृत' में 'छुटकी' के माध्यम से जैनधर्म की विकृति और वास्तविकता, 'हम यहाँ थे' में 'दीपशिखा' और 'जंगल कुमार' के माध्यम से स्त्री जीवन का संघर्ष चित्रित है। इस प्रकार उनके उपन्यासों के चरित्र जीवन और समाज के सभी पहलूओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संवाद या कथोपकथन - संवाद या कथोपकथन मूलतः नाटकों के लिए अति महत्वपूर्ण होते हैं तथापि उपन्यासों में भी

जीवन्तता, विश्वसनीयता, प्रभावोत्पादकता, देशकाल और मनोवृत्तियों के उद्घाटन हेतु ये उपांग हैं । कथानक के विकास और रचनाकार के इष्ट की अभिव्यक्ति के लिए संवाद बहुत महत्वपूर्ण होता है । मधुजी ने अपने उपन्यासों में इसका बखूबी निर्वहन किया है । उनके उपन्यास में देशकाल और पात्रोंनुकूल संवाद योजना बहुत प्रभावशाली हैं । क्योंकि उनके पात्र गाँव से शहर और शिक्षित से अशिक्षित , नेता से अपराधी, धार्मिक से नास्तिक, इमानदार से बेईमान सभी शामिल हैं । इसलिए उनके अनुकूल और मनोस्थिति के अनुरूप संवाद सहज और प्रसंगानुकूल हैं । कुछ उदहारण द्रष्टव्य हैं-

'सेज पर संस्कृत' नामक उपन्यास में छोटे संवाद को देखा जा सकता है, जो संवाद मुनि और छुटकी के बीच हुआ है- "आपकी उम्र साध्वी?

-साढ़े पाँच वर्ष।

-क्या? तो आपकी उम्र ?

-क्या आप संसार में लौट जाना चाहती हैं ?"[5]

'पत्ताखोर' नामक उपन्यास मे हेमंत बाबू का संवाद देखिए, जिससे उनकी मनः स्थिति का पता चल जाता है।

-"पेट की चिंता कैंसर बन इन युवकों के उल्लास, उत्साह और ताजगी पर हावी होती जा रही है। इनके सपने छिनते जा रहे हैं..........पर तुम चिंता मत करो, मैं आजकल में उसे समझाउँगा ....अरे इतना क्या छबड़ाना, जहाँ ईश्वर ने चिड़िया बनाई, वहीं चुग्गा भी दिया। शेर को शिकार के लिए नुकीले पंजे और जबड़े दिए तो हिरण को आत्मरक्षा के लिए दौड़ने की ताकत भी दी। सबको अपना प्राप्त मिल ही जाता है।"[6]

पुरूष समाज द्वारा औरत के छली जाने का संकेत 'सलाम आखिरी' में सुर्कीति के संवाद से मिल जाता है। जहाँ वह कहती है-

-वाह क्या बात है। नारी गिरे तो फिर शोभित नहीं होती। और पुरूष गिरे तो.......।"[7]

'सेज पर संस्कृत' नामक उपन्यास में 'छुटकी' मुख्य पात्र है, जो संन्यासियों के शोषण का शिकार हो गयी है। उसकी बड़ी बहन पढ़ी-लिखी है, वह छुटकी की स्थिति से आहत है। संवाद देखिए-

-छुटकी तू बोलती क्यों नहीं?

- सुन तो रही हूँ।

- पहले तो खूब बोलती थी।

- तुम भी तो खूब बोलती थी।"[8]

इस प्रकार 'खुले गगन के लाल सितारे' में मणि और डामिनिक जैसे शिक्षित पात्रों का संवाद अत्यंत संयत भाषा में लिखा गया है-

"अपने क्रास नहीं पहना है?

-"नहीं हम लोग पेंटी कास्तल है, क्रास पहनना हमारे लिए जरूरी नहीं है। हाँ, हड़िया पीनी हमने छोड़ दी है।"

-"क्या आप अभी भी अपने लोगों में उठते-बैठते हैं.......।"[9]

कहीं-कहीं पर ये संवाद पूर्ण रूप से यथार्थवादी बन जाने के कारण अश्लील भी हो गये हैं। मधुजी वास्तविक जगत को यथावत चित्रित करने के लिए इन संवादों को ज्यों का त्यों रख दिया है। 'सलाम आखिरी' से एक उदाहरण दृष्टव्य है-

-"पर हम भी इतने कम पैसों में अपनी पूरी की पूरी देह नहीं सौंपती हैं।.......अरे सारी बातें साफ-साफ तय करने पर भी तो हरामी की औलाद, आदमी की जात, भीतर आते ही नीयत में बेईमानी आ जाती है।"[10]

देशकाल और वातावरण- उपन्यास के दृष्टिकोण से देशकाल और वातावरण बहुत महत्वपूर्ण तत्व होते हैं । क्योंकि उसी

के सहारे काल्पनिक कथा को भी सजीव और विश्वसनीय बनाया जा सकता है साथ ही उपयुक्त देशकाल का चित्रण उपन्यास को सजीव और सशक्त रूप प्रदान करता है। परिवेश की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. धनंजय वर्मा ने कहा है कि- "मनुष्य द्वारा जीने के लिए किया जाता संघर्ष रचना में किस हद तक वास्तविक है, उसे साबित करने के लिए हर समर्थ लेखक जीवन और रचना के परिवेश से जोड़कर अपने दायित्व और रचना-धर्म का निर्वाह करता है।"[11]

इस दृष्टिकोण से भी मधुजी के सभी उपन्यास अत्यंत सफल हैं क्योंकि उससे तत्कालीन परिस्थितियों को आसानी से समझा जा सकता है । 'खुले गगन के लाल सितारे' में नक्सलवादी सशस्त्र आंदोलन और तत्कालीन राजनीतिक परिवेश का विश्वसनीय चित्रण है । 'सेज पर संस्कृत' में जैनधर्म की विकृतियों और तत्कालीन समाज के सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने का सजीव चित्रण है ।

भाषा- भाषा भावों और विचारों की संवाहिका और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । साहित्यकार की संवेदना और कथ्य भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त होते हैं । उपन्यास ही नहीं किसी भी एनी विधा की रचना में भी अन्य सरे तत्वों का विनियोग उत्तम हो और सिर्फ भाषा उपयुक्त, समर्थ न हो तो उसका सारा सौन्दर्य, कथ्य और प्रभाव समाप्त हो जाता है ।

नागार्जुन ने लिखा है कि- "भाषा बहुत धीरे-धीरे आकार ग्रहण करती है और विकसित होती है। हर भाषा का अपना एक अलग रूप, एक अलग जादू होता है। विषय के अनुसार भाषा अपना रूप बदल लेती है। हमारे सामाजिक संघर्षों में भाषा की भूमिका नींव की तरह है। लेखक भाषा का प्रवर्तक और संरक्षक मा ना जाता है। शब्द कहाँ जाकर चोट करते हैं, यह जानना कठिन है। भाषा गहरी और संप्रेषणीय होने के साथ-साथ सजग होनी चाहिए। सम्प्रेषणीयता के अभाव में भाषा निर्जीव हो जाती है। समय के प्रति चौकस रहते हुए जीवन के प्रति सर्वांग संपन्न दृष्टि जरूरी है। पाठक की, आम जनता की एक भाषा होती है। उससे एकदम दूर न हो पर उसका विकास जरूरी है। कविता का अर्थ सपाटबयानी भी नहीं हो सकता। कलात्मक प्रयोग भी एक सीमा तक हो। भाषा में सौंदर्य और व्यंजना तो होनी ही चाहिए।''[12]

नागार्जुन ने रचना के भाषिक संप्रेषण के सन्दर्भ में अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि- "भाषिक संरचना तो पाठक को समझनी ही होगी। सम्प्रेषणधर्मी का अर्थ व्यंजना या लक्षणा से विहीन कविता नहीं होती। आपको यदि उनके बीच पहुँचना है तो छंद, तुकबंदी और लय जरूरी है। उनके बीच जाकर और गाकर सुनाने की क्षमता और साहस होना चाहिए। जनता मेरी भी सभी रचनाओं को कहाँ पसंद करती है। जनता हमारे यहाँ इतनी शिक्षित नहीं है कि वह कालिदास के मेघदूत को समझ सके। यह कवि का काम है कि वह अपने को सम्प्रेष्य बनाए। उनके बारे में उनकी ही भाषा में लिखना होगा। कविता अ धिक लंबी न हो और करंट टॉपिक पर होनी चाहिए। गहरी अर्थवत्ता के साथ-साथ कविता सहज और सरल होगी तभी जनसमूह को तरंगित करेगी।"[13]

इसीलिए उपन्यासों की भाषा पात्र, प्रसंग और देशकाल के अनुरूप होना चाहिए । भाषा के दृष्टिकोण से भी मधुजी के उपन्यास बेहतर है । उनकी भाषिक संरचना उपयुक्त और प्रभावशाली है । उनकी भाषा विविध भाषिक गुणों से सुसज्जित है, यथा:- बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, आंचलिकता आदि । उनकी भाषा संपन्न, सशक्त और अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति में सफल है, क्योंकि उनकी शब्द सम्पदा विस्तृत और सहज ही देशज-विदेशज शब्दों तथा कहावतों-मुहावरों के प्रयोग से संपृक्त है ।

मधुजी के उपन्यासों की प्रतीकात्मकता के सन्दर्भ में 'खुले गगन के लाल सितारे' शीर्षक उपन्यास में 'लाल सितारे' उन क्रांतिकारियों के प्रतिक हैं जो नक्सल आन्दोलन में मरे जा चुके थे और वे भी जो मरते दम तक लड़ने को तैयार हैं । वाही क्रन्तिकारी 'लाल सितारे' हैं जो समाज के सबसे निचले पन्यदन पर खड़े, दबे-कुचले और शोषित, असहाय लोगों के अधिकार हेतु लड़ रहे हैं । लेखिका का कथन है कि-"आंदोलन की रीढ़ की हड्डी टूट चुकी थी। अधिकांश लाल सितारे टूट चुके थे और बचे रह गए थे, वे सब अलग-अलग अपने-अपने क्षितिजों में थे, जिनमें मध्याह्न के सूर्य की प्रखरता अब नहीं बची थी।"[14]

बिंब- बिंब मूलतः अंग्रेजी के 'इमेज' का हिंदी रूपांतर है। बिंब सामान्यतः किसी रचनाकार के जीवनानुभवों का शब्द-चित्र के माध्यम से अपनी रचना में प्रकटीकरण है। जब कोई रचनाकार शब्दों के माध्यम से वर्ण्य विषय या वस्तु का सजीव, साक्षात जैसा चित्र पाठक के सम्मुख प्रस्तुत कर देता है, उसे ही किसी रचना का बिंब-विधान कहते हैं। मधुजी के उपन्यासों में यत्र-तत्र बिम्ब विधान का सुन्दर निदर्शन देखने को मिलता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं--"दुल्हन पारसी का संन्यासिन पारसी में रूपांतरण। श्रृंगारहीन। मुड़ा सिर। मुँह पर श्वेत मुँहपट्टी। नंगे पैर। श्वेत वस्त्र। चेहरे पर भावहीन उदासी।"[15]

-"चिहुँक उठी दिव्या। कनपटी और पेट सनसनाने लगे। चेहरा इस कदर जलने लगा, जैसे किसी अदृश्य सूरज ने अपना सारा ताप उसके चहरे पर उँड़ेल दिया हो।"[16]

सांकेतिकता- जब किसी रचना में रचनाकार अपने वर्ण्य विषय या वस्तु का उसके सादृश्य या साधर्म्य के आधार पर किसी अन्य वस्तु के संकेत से पाठकों के सम्मुख प्रकट करता है, उसे ही प्रतीकात्मकता कहा जाता है। मधुजी के उपन्यासों की भाषा में यत्र-तत्र सांकेतिकता का भी सुन्दर-सहज प्रयोग मिलता है।

कुछ उदाहरण--"संघमित्रा के हाथ अब किसी उमरावजान के हृदय बन चुके थे, जिन्हें बिना बात ही उसने अपने हाथों में ले लिया था और उसे दबाते हुए इस कदर कामुक निगाहों से घूरने लगा कि संघमित्रा को लगा कि वस्त्र पहने भी वह निर्वस्त्र हो चुकी है।"[17]

-"सृष्टि को आगे बढ़ाने का 'वह कार्य' संपन्न कराया गया। कुछ-कुछ उसी प्रकार जिस प्रकार उच्च वर्गों में लोग अपने पालतू कुत्तों को 'मेटिंग' के लिए कुतिया के पास ले जाते हैं या कि गाँवों में गायों को।"[18]

अलंकारिकता - अलंकारिकता मूलतः काव्य का आवश्यक और महत्वपूर्ण उपादान है तथापि कथ्य के सौन्दर्य और चमत्कार को प्रभावी बनाने हेतु कथा साहित्य में भी अलंकारिक भाषा का प्रयोग कथाकार करते रहे हैं। मधुजी के उपन्यासों में भी इसका निदर्शन होता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं--"पुत्र के आने की खबर केसर की सुगंध की तरह दूर से ही बनरी तक पहुँच चुकी थी।"[19]

-"मुझे उसके कैनवास पर रंग भरना है। खूबसूरत और खिलते हुए रंग। मुझे इसके बचपन और रंगों को इसे वापस लौटाना है और इसके साथ ही मैंने एक चुप्पी ओढ़ ली। फूल-सी कोमल और गांधी जी सी अहिंसक चुप्पी।"[20]

इसके अलावा मधुजी के उपन्यासों में विविध भाषिक प्रयोग भी मिलते हैं। उनके उपन्यासों की भाषा में देशज, विदेशज, कहावतें, मुहावरे आदि का सुन्दर प्रयोग है। उनके उपन्यासों की भाषा में प्रयुक्त प्रमुख देशज, विदेशज, कहावतें, मुहावरे आदि :-

अंग्रेजी शब्द- टैक्स, कंपनी, स्टार डॉक्टर, सिस्टम मैडम, सुपरिटेंडेंट, एन्टीनक्सलाइट, सेन्ट्रल, स्टेशन, किलर, पार्क, टीचर, डिकन्स्ट्रक्शन, कैरियर, होमवर्क, ऑफिस, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, एकांउट, स्कूल, कॉलेज नॉलेज, परमिशन, डिपार्टमेंट, सिस्टम, नॉर्मल, विटामिन, इडिएट, ट्रेन, ड्राम, लाकअप, कॉमरेड, वेट, एस. पी. क्लिनिक, कंडोम, टेबल, चेयर, सीजन, मार्केट, बेल, प्रैक्टिस, आँफिस, सेक्स कवर आदिं

उर्दू-फारसी शब्द- मुनाफाखोर, चैखट अम्मा, बाजार, चीज, मर्द, औरत, खुद, बकवास, बदनाम, कीचड़, खतरनाक शख्स, दौलत, शोहरत, आलमारी, ताकत, खामोश, आवाज, बुखाकर, मर्द, उम्मीद, हत्यारे, डकैत, माचिस, कबूतर, रोटी, खबर, आदमी, कानूनी, चादर, पेशा, कागज, ग्राहक, खूब, अफसाना, खिड़की, मुहल्ला, अखबार, दहशत, नजर, गमगीन, फरमान, मौत, खिलौना, कुल्ला, जिंदगी, मालिश, तिकड़क, बेईमान, कामयाब, खूबसूरत, अहसास, नशा, आबादी, तलाश, कसम आदि।

देशज/ठेठ शब्द - बतियाते-झिक-झिक, खिंच-खिच, रोना-धोना,औन-पौने, जली-भुनी, तामझाम, अटपटे, टर्र-टर्र, टुच्चे पन, कोनो, कबहुँ, बाटे, लड़कन, मईया, केरा, चू पड़े, कूबत, गांडू, उबड़-खाबड़ कुम्हड़े, मांड, टन-टन, मटरमाला, दमदार, लाग-लपेट गाह-बगाहे, बित्तभर, उमगी, घास, खाँटी, बनिया, सलटाती, छुकरी, लुच्चा, कुटनी आदि।

मुहावरे- पाँव जमना, लोहा लेना, बवंडर उठना, नाक-फुलाना, गुलाबी चेहरा, तमतमा गया, आँखें चार होना, हिटलरी करमान, गुलघरे उड़ाना, खूनी पंजे, गुस्सा थूकना, पिंड छुड़ाना, काटने को दौड़ना, होश ठिकाने लगना, जान देना, जान छिड़कना, मन हारा होना, सिर नीचा होना, चुटकी लेना, मुँह मारना, भीगी बिल्ली, न्याय का सूरज उगना खूँटा गाड़ना, आँखें फोड़ना, उथल-

पुथल, तोड़-फोड़, ऊँट की तरह, लहुलहान होना, खून पीना, फड़फड़ा उठना, दिव्य दिव्य-सा लगना आदि।

कहावतें- 'माल खाए खसम का गीत गाए वीराँ का', 'जैसी करनी वैसी भरनी', 'सहजा चूड़ा फूट गयो हाथ, 'बाई का बंधन कटिया', 'भली करी जगन्नाथ' 'सर्वे भवन्तु सुखिन जैसी मनसा वैसी दशा, 'बित्ते भर की छोकरी और गज', 'भर की जीभ' 'चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय' 'वेश्या हो गयी बाँझ', 'जाट कहे सुन जाटनी' 'इस गाँव में रहना' 'ऊँट बिलाई ले गयो', हाँजी हाँजी कहना', 'बिना खूँटे के गाय नहीं उछलती', 'बेटा खाय रोटी, तो बेटी खाय बोटी', नंगे बूचे सबसे ऊँचे" आदि।

शैली- शैली से तात्पर्य रचनाकार के अपनी रचना में विचार व्यक्त करने का ढंग, तरीका या कौशल है । मधुजी के उपन्यासों में विविध रचना शैलियों का प्रयोग विविध सन्दर्भों में किया गया है। इनमे मुख्यतः वर्णनात्मक शैली है जो सबसे ज्यादा प्रयुक्त है। इसके अलावा विश्लेष्णात्मक शैली में विभिन्न मूर्त-अमूर्त भावों की तर्क-प्रधान व्याख्या मिलती है। आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग लेखिका अपने स्वयं के जीवनानुभवों को पात्रों के मुख से कहलवाने के निमित्त यत्र-तत्र किया है। परंपरा से प्रसिद्द और निराला, मुक्तिबोध आदि आधुनिक कल के सुप्रसिद्ध बड़े साहित्यिकों की पसंद पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग भी यदा-कदा देखने को मिलता है। इसके साथ ही छोटे-छोटे संवाद में संवाद शिली का का बहुत सुन्दर प्रयोग मिलता है। इसके आलावा 'खुले गगन के लाल सितारे' और 'सेज पर संस्कृत' आदि उपन्यासों में डायरी और पत्र शैली का भी प्रयोग मिलता है।

निष्कर्षतः मधु कांकरिया के उपन्यासों का शिल्प-विधान की दृष्टि से आधुनिक हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। सामाजिक परिवेश उनके उपन्यास लेखन का मुख्य केंद्रबिंदु भी है और लक्ष्य भी । शिल्प विधान की दृष्टि से उनके सभी उपन्यास कलात्मक, सहज, सरस, और प्रभावशाली हैं और उनका यह शिल्प विधान उन्हें अन्य समकालीन महिला उपन्यासकारों से अलग और विशेष बनाता है।

सन्दर्भ सूची:-

1. मधु काँकरिया का रचना-संसार- डॉ. उषा कीर्ति राणावत, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2012, पृ. 11
2. उपन्यास की संरचना- डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006, पृ. 9
3. त्रिज्या-शैलेश मटियानी, बेसिल बुक्स इंटरनेशनल, 2008, पृ. 236
4. सेज पर संस्कृत-मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008, पृ. 112
5. वही, पृ. 180
6. पत्ताखोर- मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005,पृ. 63
7. सलाम आखिरी-मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007, पृ. 136
8. सेज पर संस्कृत-मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008, पृ. 77
9. खुले गगन के लाल सितारे-मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ. 91
10. सलाम आखिरी-मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007, पृ. 71
11. आज की हिन्दी कहानी-धनंजय वर्मा, पृ. 66
12. मधु काँकरिया का रचना-संसार-डॉ. उषा कीर्ति राणावत, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2012, पृ. 92
13. नागार्जुन, मेरे साक्षात्कार, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ सं.- 43
14. उपरिवत, पृष्ठ सं.- 44
15. खुले गगन के लाल सितारे मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ. 116
16. खुले गगन के लाल सितारे - मुध काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ. 144
17. सेज पर संस्कृत - मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008, पृ. 184
18. वही, पृ. 150
19. खुले गगन के लाल सितारे - मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ. 55
20. पत्ताखोर- मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005, पृ. 47